208वां भिक्षु चरमोत्सव

आचार्य भिक्षु दुरगामी सोच के धनी थे : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 21 सितञ्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने 208वें आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के अवसर पर कहा कि आचार्य भिक्षु दुरगामी सोच के धनी थे। उन्होंने आत्म निष्ठा, संघनिष्ठा, आज्ञा निष्ठा, आचार निष्ठा, मर्यादा निष्ठा के रूप में पंचामृत प्रदान किया। इन निष्ठाओं को अपनाने वाला सुरक्षित रहता है। अपने संयम जीवन को सफल बना लेता है। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि जिसका जीवन संयममय, परोपकारमय होता है, उनका जीवन धन्य होता है। आचार्य भिक्षु ने परोपकार का जीवन जीया। उनमें अनुकंपा की चेतना जागृत थी। जिसकी अनुकंपा की चेतना जागृत हो जाती है, वह दूसरों का उद्धार कर सकता है। आचार्य प्रवर ने इस मौके पर स्वरचित गीत का संगान भी किया।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि आचार्य भिक्षु आध्यात्मिक पुरुष थे। उनको याद करने से आध्यात्मिक चेतना को बल मिलता है। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु क्रांतिकारी संत थे। उन्होंने जीवन में अनेक संघर्ष झेलें और धर्म की सार्वभौम व्याज़्या की। उसी के आधार पर आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया। साध्वीप्रमुखा ने आचार्य भिक्षु को समझने के लिए भिक्षु दृष्टांत नामक पुस्तक का अध्ययन करने की प्रेरणा दी।

मुज़्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविाा ने आचार्य भिक्षु के जीवन प्रसंगों पर अपने विचार रखे। साध्वी पीयुषप्रज्ञा, साध्वी कीर्तिरेखा, साध्वी ललितप्रभा ने भाषण, कविता आदि के द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ कन्या मण्डल ने मंगलाचरण किया। तेरापंथ महिला मण्डल ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार एवं साध्वी शुभ्रप्रभा ने किया।

23 को आयोजित होगी भक्ति संगीत संध्या

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 23 सितञ्बर की रात्रि 7.30 बजे भक्ति संध्या का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद द्वारा किया जायेगा। उक्त जानकारी देते हुए युवक परिषद के मंत्री कमलेश आंचलिया ने बताया कि मूलचन्द विकास कुमार मालू के प्रायोजकत्व में आयोजित इस संध्या पर जाने माने कलाकार, संगायक कमल सेठिया आकर्षक प्रस्तुतियां देंगे।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)